साँची का स्तूप

हालिया संदर्भ :

- भारतीय विदेश मंत्री एल. जयशंकर अपनी जर्मनी यात्रा के दौरान बर्लिन में हम्बोल्ट फोरम संग्रहालय के सामने साँची के महान स्तूप के प्रतिकृति के सामने पहुँचे।
- यह प्रतिकृति मूल संरचना के समान ही है, जो लगभग 10 मीटर ऊँचा एवं 6 मीटर चौडा है, जिसका वजन लगभग 150 टन है।
- अलंकृत लाल बलुआ पत्थर से निर्मित इस प्रतिकृति का अनावरण दिसम्बर 2022 में किया गया था।

साँची का स्तूप :

- 'स्तूप' एक बौद्ध स्मारक है, जो सामान्यतः महात्मा बुद्ध या अन्य आदरणीय बौद्ध संतों के अवशेषों पर निर्मित होते हैं।
- यह स्तूप अन्य स्तूपों की तरह ही अर्द्धगोलाकार संरचना के रूप में है, जिसका निर्माण तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व में मौर्य वंश के महान शासक अशोक के द्वारा करवाया गया था।
- यह प्राचीनतम बौद्ध स्तूपों में से है, जिसके निर्माण का देख-रेख महान अशोक की पत्नी देवी ने किया था।
- इस स्तूप के परिसर में कई अन्य स्तूप, मठ एवं मंदिर जैसी संरचनाएँ भी है।

- यह स्तूप अपने विशिष्ट प्रवेश-द्वार 'तोरण' के लिये प्रसिद्ध है।
- चार दिशाओं की ओर उन्मुख 4 तोरणों का निर्माण संभवतः पहली शताब्दी ईसा पूर्व में करवाया गया था, जिसमें सातवाहन राजवंश के शासकों का योगदान था।
- ये तोरण वर्गाकार स्तंभों से बने हैं, जिन पर बुद्ध के जीवन दृश्यों, जातक कथाओं के चित्रों एवं अन्य बौद्ध प्रतिमाओं से सजे हुए हैं।

यूरोप में प्रतिकृति :

- यूरोप में साँची स्तूप का पूर्वी द्वार का तोरण सबसे प्रसिद्ध है, जिसके पीछे ऐतिहासिक कारण है।
- दरअसल साँची के परिसर की खोज 1818 में ब्रिटिश अधिकारी हेनरी टेलर द्वारा किया गया लेकिन यह तब तक खंडहर में परिवर्तित हो चुका था।
- अलेक्जेंडर कनिंघम ने 1851 में साँची में पहला औपचारिक सर्वेक्षण एवं उत्खनन किया।
- 1910 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) के महानिदेशक जॉन मार्शल ने भोपाल के रानियों से मिले फंड के द्वारा इस स्तूप का जीर्णोद्धार कर वर्तमान स्वरूप प्रदान किया।
- माना जाता है कि 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक ब्रिटिश शौकिया पुरातत्वविदों द्वारा साँची के स्तूप के द्वारों का क्षरण किया जाता रहा, ताकि इन द्वारों (तोरण) को यूरोप लेकर जाया जा सके, लेकिन ऐसा नहीं हो सका और उन्हें इसकी लोकप्रियता को देखते हुए प्रतिकृति बनवानी पडी।

ASI :

- 1961 में अलेक्जेंडर कनिंघम के पहले महानिदेशक बनने के साथ इसकी स्थापना हुई।
- इसका HQ नई दिल्ली में है।
- इस संस्था का कार्य भारत में प्राचीन स्मारकों एवं पुरातात्विक स्थलों के रखरखाव एवं उनका संरक्षण करना है।
- यह ऐसे ऐतिहासिक स्थलों में पर्यटन को बढावा देने के लिये प्रयास करती है।
- यह संस्कृति मंत्रालय के अधीन आता है।

अन्य तथ्य :

- साँची का स्तूप मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में एक छोटी पहाडी पर स्थित है।
- यह स्तूप बेतवा नदी के बहाव-क्षेत्र से थोडी दूरी पर निर्मित है।
- विभिन्न स्तूपों में स्तूप संख्या-2 सबसे बडा है।
- परिसर में कई गुप्तकालीन स्तूप एवं स्तंभ भी है।
- शुंग वंश के शासक अग्निमित्र शुंग ने स्तूप का जीर्णोद्धार कर इसे और विशाल बना दिया।

Result Mitra